Series HMJ/C

SET-1

कोड नं. **2/C/1**

रोल नं. | | | | | | | | |

परीक्षार्थी कोड को उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अवश्य लिखें ।

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में मुद्रित पृष्ठ **8** हैं ।
- प्रश्न-पत्र में दाहिने हाथ की ओर दिए गए कोड नम्बर को छात्र उत्तर-पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर लिखें ।
- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में **12** प्रश्न हैं ।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, उत्तर-पुस्तिका में प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें ।
- इस प्रश्न-पत्र को पढ़ने के लिए 15 मिनट का समय दिया गया है । प्रश्न-पत्र का वितरण पूर्वाह्न में 10.15 बजे किया जाएगा । 10.15 बजे से 10.30 बजे तक छात्र केवल प्रश्न-पत्र को पढ़ेंगे और इस अवधि के दौरान वे उत्तर-पुस्तिका पर कोई उत्तर नहीं लिखेंगे ।

हिन्दी (आधार)

HINDI (Core)

निर्धारित समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 80*

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख़्ती से अनुपालन कीजिए :

(i) *प्रश्न-पत्र **तीन** खण्डों में विभाजित किया गया है — **क, ख** एवं **ग** । सभी प्रश्न **अनिवार्य** हैं ।*

(ii) ***खण्ड क** में प्रश्न संख्या **1** और **2** अपठित गद्यांश एवं काव्यांश पर आधारित हैं ।*

(iii) ***खण्ड ख** में प्रश्न संख्या **3** से **6** तक प्रश्न कार्यालयी हिन्दी और रचनात्मक लेखन पर आधारित हैं ।*

(iv) ***खण्ड ग** में प्रश्न संख्या **7** से **12** तक प्रश्न पाठ्य-पुस्तकों से हैं ।*

(v) *यथासंभव प्रत्येक खण्ड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए ।*

(vi) *उत्तर संक्षिप्त तथा क्रमिक होने चाहिए और साथ ही दी गई शब्द सीमा का यथासंभव अनुपालन कीजिए ।*

(vii) *प्रश्न-पत्र में समग्र पर कोई विकल्प नहीं है । तथापि, कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं । ऐसे प्रश्नों में से **केवल एक ही विकल्प का उत्तर** लिखिए ।*

(viii) *इनके अतिरिक्त, आवश्यकतानुसार, प्रत्येक खण्ड और प्रश्न के साथ यथोचित निर्देश दिए गए हैं ।*

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

राष्ट्रीय चेतना की सृजनात्मक अभिव्यक्ति ही उस राष्ट्र की समग्र सांस्कृतिक चेतना कही जाती है । काल के मानदंड पर राष्ट्र-चेतना की सृजनात्मक अभिव्यक्ति से शाश्वत, युगीन और क्षणिक तीन संस्कृति-श्रेणियाँ निर्मित होती हैं । ये संस्कृति-भेद व्यक्तिगत भिन्नता अर्थात् रुचि भिन्नता के कारण बनते हैं पर इनका मूल उद्‌गम एकात्म है । जीव का आश्रय प्राण है, प्राण का आश्रय देह और देह आवश्यकताओं के अधीन है । दैनिक आवश्यकताओं पर वाणिज्य तंत्र का अधिकार हो जाने से हम शासित और शोषित होने लगते हैं । इसलिए स्वतंत्रता और स्वराज के चिंतकों ने राज्य और वाणिज्य की व्यवस्था पर गहराई से विचार किया । इसके समानांतर हमें राज्य और वाणिज्य की शक्तियों से होने वाली युगीन और क्षणिक संस्कृति-भेदों पर शाश्वत संस्कृति के आलोक में विचार करना आवश्यक है ।

संस्कृति की शाश्वत धारा का निर्माण वाल्मीकि, व्यास, नानक, कबीर, सूर, तुलसी, निराला, रवींद्र, भारती, कुरुप्पु, जैसे महाकवियों एवं मनीषी चिंतकों – आध्यात्मिक पुरुषों से होता है । यह सत्वगुणी भाव धारा है । इन व्यक्तियों की प्राणशक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं के अधीन होकर व्यय नहीं होती, अपितु ये सत्वधर्मी स्थिर स्मृति में रहते हुए अत्यल्प साधनों से राष्ट्र की चेतना को पोषित करते हैं । इनके संकल्प और सृजन से लोक में उच्चतम जीवन आदर्शों की स्थापना होती है और इन पर बाह्य जगत का शासन नहीं चल सकता, किसी राजनीति या आर्थिक व्यवस्था को इनकी अनुरूपता स्वीकार करनी पड़ती है । सर्वोच्च राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाएँ जब शाश्वतता का अनुपालन करती हैं तभी सार्थक हो पाती हैं । अतः समकालीन संस्कृति और क्षणिक संस्कृति (उपभोक्ता या अपसंस्कृति) को भी आत्मघात से बचने के लिए शाश्वत संस्कृति का अनुसरण अपने स्तर में रहते हुए करना उचित होता है । तभी वह राष्ट्र की अभिव्यक्ति बन कर लोक ग्राह्य हो सकती है और मंगलकारी कही जा सकती है ।

(क) गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए । *1*

(ख) 'संस्कृति की शाश्वत धारा' से क्या आशय है ? वह किसे पोषित करती है ? *2*

(ग) संस्कृति भेदों की रचना कैसे होती है ? वे भेद क्या-क्या हैं ? *2*

(घ) राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्थाओं को सार्थकता कैसे मिलती है ? *2*

(ङ) युगीन और क्षणिक संस्कृतियों को किससे बचना होता है और कैसे ? *2*

(च) लेखक ने मनीषी चिंतकों के प्राणशक्ति की क्या विशेषता बताई है ? लोक में इनका प्रभाव कैसे पड़ता है ? *2*

(छ) 'आध्यात्मिक' शब्द में निहित उपसर्ग और प्रत्यय को छाँटकर लिखिए । *1*

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *1×4=4*

सतपुड़ा के घने जंगल
नींद में डूबे हुए-से
ऊँघते अनमने जंगल
धँसो इनमें डर नहीं है,
मौत का यह घर नहीं है,
उतर कर बहते अनेकों,
कल-कथा कहते अनेकों,
नदी निर्झर और नाले,
इन वनों ने गोद पाले,
लाख पंछी सौ हिरन-दल,
चाँद के कितने किरण-दल,
झूमते बन-फूल फलियाँ,
खिल रही अज्ञात कलियाँ,
हरित दूर्वा, रक्त किसलय,
पूत, पावन, पूर्ण रसमय ।

(क) 'पूत' और 'पावन' विशेषणों का प्रयोग किसके लिए किया गया है ?
(ख) कवि को सतपुड़ा के घने जंगल ऊँघते हुए से क्यों लगते हैं ?
(ग) 'कल-कथा कहते अनेकों' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए ।
(घ) इन वनों ने किन्हें पाल रखा है ?

अथवा

बुनी हुई रस्सी को घुमाएँ उल्टा
तो खुल जाती है
और अलग-अलग देखे जा सकते हैं उसके सारे रेशे
मगर कविता को कोई
खोले ऐसा उल्टा
तो साफ नहीं होंगे हमारे अनुभव
इस तरह

क्योंकि अनुभव तो हमें
जितने इसके माध्यम से हुए हैं
उससे ज्यादा हुए हैं दूसरे माध्यमों से
व्यक्त वे जरूर हुए हैं यहाँ

कविता को
बिखरा कर देखने से
सिवा रेशों के क्या दिखता है !

लिखने वाला तो
हर बिखरे अनुभव के रेशे को
समेटकर लिखता है ।

(क) कविता को रस्सी की तरह उल्टा घुमाना उचित क्यों नहीं है ?

(ख) कवि अनुभव के रेशों का क्या करता है ?

(ग) बुनी हुई रस्सी के साथ क्या कर सकते हैं जो कविता के साथ संभव नहीं है ?

(घ) 'व्यक्त वे जरूर हुए हैं यहाँ' पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए ।

खण्ड ख

3. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए : *5*

(क) विद्यालय जाने से पहले का एक घंटा

(ख) घट रही है परिश्रम की आदत

(ग) फिल्मों का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं

4. स्वच्छताकर्मियों के प्रति सामाजिक सोच में बदलाव की ज़रूरत को रेखांकित करते हुए किसी प्रतिष्ठित समाचार-पत्र के संपादक को लगभग 80 – 100 शब्दों में पत्र लिखिए । *5*

अथवा

सड़क दुर्घटनाओं में हो रही बढ़ोतरी पर चिंता जताते हुए यातायात के नियमों को कठोरता से लागू करने हेतु, नगर के पुलिस अधीक्षक को लगभग 80 – 100 शब्दों में पत्र लिखिए । *5*

5. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर अधिकतम 15 – 20 शब्दों में लिखिए : *1×5=5*

(क) 'खोजपरक पत्रकारिता' किसे कहते हैं ?

(ख) रेडियो की भाषा कैसी होनी चाहिए ?

(ग) पीत पत्रकारिता किसे कहते हैं ?

(घ) 'संपादकीय' की दो विशेषताएँ लिखिए ।

(ङ) एंकर बाइट क्या है ?

6. उल्टा पिरामिड शैली एवं समाचार के छह ककारों को ध्यान में रखते हुए किसी खेल प्रतियोगिता का समाचार लगभग 80 – 100 शब्दों में लिखिए । *5*

अथवा

'ज्ञान का संसार – विद्यालय का पुस्तकालय' विषय पर लगभग 80 – 100 शब्दों में एक फ़ीचर लिखिए । *5*

अथवा

कहानी की रचना में कथानक का महत्त्व लगभग 80 – 100 शब्दों में स्पष्ट कीजिए । *5*

खण्ड ग

7. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 – 40 शब्दों में लिखिए : *2×3=6*

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं
डाल की तरह लचीले वेग से अकसर
छतों के ख़तरनाक किनारों तक –
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज एक धागे के सहारे ।

(क) 'कपास' शब्द किसका प्रतीक है ? उसे जन्म से ही साथ लाना क्या संकेत कर रहा है ?

(ख) 'छतों को भी नरम बनाने' का क्या भाव है ?

(ग) दिशाओं को मृदंगों की तरह बजाने से कवि का क्या आशय है ?

अथवा

हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी
जल्दी-जल्दी चलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे –
यह ध्यान परों में चिड़ियों के
भरता कितनी चंचलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

मुझसे मिलने को कौन विकल ?
मैं होऊँ किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को,
भरता उर में विह्वलता है !
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !

(क) पंथी क्या सोच रहा है और क्यों ?
(ख) चिड़िया चंचल क्यों हो रही है ?
(ग) कवि को किस बात की चिंता है और क्यों ?

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लगभग 30 – 40 शब्दों में लिखिए : *2×2=4*

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर ।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना मँह बीर रस ।।

(क) काव्यांश का भाव-सौंदर्य लिखिए ।
(ख) काव्यांश की अलंकार योजना पर प्रकाश डालिए ।

अथवा

बहुत काली सिल ज़रा से लाल केसर
कि जैसे धुल गई हो

स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने

(क) काव्यांश का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए ।
(ख) काव्यांश की शिल्प संबंधी कोई दो विशेषताएँ लिखिए ।

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 – 70 शब्दों में लिखिए : *3×2=6*

(क) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, कैसे ?

(ख) 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि के और किसान के कार्य में समानता किस प्रकार प्रदर्शित की गई है ?

(ग) 'सहर्ष स्वीकारा है' कविता में कवि ने जीवन की हर स्थिति को सहर्ष क्यों स्वीकार किया है ?

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *2×3=6*

यह विडंबना की ही बात है कि इस युग में भी 'जातिवाद' के पोषकों की कमी नहीं है । इसके पोषक कई आधारों पर इसका समर्थन करते हैं । समर्थन का एक आधार यह कहा जाता है कि आधुनिक सभ्य समाज 'कार्य-कुशलता' के लिए श्रम-विभाजन को आवश्यक मानता है और चूँकि जाति-प्रथा भी श्रम-विभाजन का ही दूसरा रूप है इसलिए इसमें कोई बुराई नहीं है । इस तर्क के संबंध में पहली बात तो यही आपत्तिजनक है कि जाति-प्रथा श्रम-विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन का भी रूप लिए हुए है । श्रम-विभाजन निश्चय ही सभ्य समाज की आवश्यकता है परंतु किसी भी सभ्य समाज में श्रम-विभाजन की व्यवस्था श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती । भारत की जाति-प्रथा की एक और विशेषता यह है कि यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित विभिन्न वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है, जो कि विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता ।

(क) लेखक किस बात को विडंबना मानता है और क्यों ?

(ख) भारत की जाति-प्रथा विश्व से अलग कैसे है ?

(ग) जातिवाद का समर्थन किन कुतर्कों द्वारा किया जाता है ?

अथवा

उस बल को नाम जो दो; पर निश्चय वह उस तल की वस्तु नहीं है जहाँ पर संसारी वैभव फलता-फूलता है । वह कुछ अपर जाति का तत्त्व है । लोग स्पिरिचुअल कहते हैं; आत्मिक, धार्मिक, नैतिक कहते हैं । मुझे योग्यता नहीं कि मैं उन शब्दों में अंतर देखूँ और प्रतिपादन करूँ । मुझे शब्द से सरोकार नहीं । मैं विद्वान नहीं कि शब्दों पर अटकूँ । लेकिन इतना तो है कि जहाँ तृष्णा है, बटोर रखने की स्पृहा है, वहाँ उस बल का बीज नहीं है । बल्कि यदि उसी बल को सच्चा बल मानकर बात की जाए तो कहना होगा कि संचय की तृष्णा और वैभव की चाह में व्यक्ति की निर्बलता ही प्रमाणित होती है । निर्बल ही धन की ओर झुकता है । वह अबलता है । वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है ।

(क) गद्यांश में वर्णित बल क्या है ? व्यक्ति कब निर्बल हो जाता है ?

(ख) लेखक ने 'अपर जाति का तत्त्व' किसे कहा है और क्यों ?

(ग) लेखक ने क्यों कहा है कि – 'वह मनुष्य पर धन की और चेतन पर जड़ की विजय है ।'

11. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *4+4+2=10*

(क) भक्तिन अपना नाम क्यों बदलना चाहती थी ? लेखिका ने इस संदर्भ में क्या कहा है ?
(लगभग 80 से 100 शब्दों में)

अथवा

हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी बहुत आवश्यक हो जाती है । 'शिरीष के फूल' पाठ के आधार पर समझाइए ।

(ख) 'काले मेघा पानी दे' पाठ में भारतीय समाज की किस दुविधा तथा आडंबर को व्यक्त किया गया है ? इस पर अपने विचार भी लिखिए ।
(लगभग 80 – 100 शब्दों में)

(ग) ज़मीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुँच पाई हैं, कैसे ? 'नमक' पाठ के आधार पर लिखिए । (लगभग 30 – 40 शब्दों में)

12. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 – 100 शब्दों में लिखिए : *4×3=12*

(क) स्पष्ट कीजिए कि 'जूझ' के कथानायक का जीवन संघर्ष अभावग्रस्त समाज में जी रहे व्यक्तियों के लिए प्रेरणास्रोत भी है ।

(ख) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर सिंधु घाटी सभ्यता के नगर स्थापत्य की विशिष्टताओं का उल्लेख कीजिए ।

(ग) "ऐन फ्रैंक की डायरी एक ऐतिहासिक दस्तावेज़ होने के साथ-साथ भावनाओं की मार्मिक अभिव्यक्ति भी है ।" टिप्पणी कीजिए ।

(घ) 'जीवन के आधुनिक तौर तरीकों' के प्रति यशोधर पंत और उनकी पत्नी के दृष्टिकोण में क्या अंतर है ? सोदाहरण समझाइए ।

(ङ) 'अतीत में दबे पाँव' पाठ के आधार पर विश्लेषण कीजिए कि 'हड़प्पा कालीन संस्कृति मुख्यत: कृषि प्रधान थी' ।